



डॉ० अखिलेश कुमार सरोज

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार की समस्या: नई सोच की आवश्यकता

असि. प्रोफेसर-समाजशास्त्र, डॉ० राजेश्वर सेवाश्रम महाविद्यालय, ढिंडुई, प्रतापगढ़, (उ०प्र०) भारत

Received-22.10.2024,

Revised-29.10.2024,

Accepted-05.11.2024

E-mail : aaryavart2013@gmail.com

सारांश: भारत में भ्रष्टाचार एक जटिल और विकराल समस्या के रूप में मौजूद है, जो न केवल शासन-प्रशासन को प्रभावित करता है, बल्कि समाज की नैतिक और आर्थिक संरचना को भी कमजोर करता है। यह एक ऐसी समस्या है, जिसका समाधान सिर्फ कानून और शासन के द्वारा नहीं किया जा सकता, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक और संगठन की भागीदारी की आवश्यकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय समाज में भ्रष्टाचार के मौजूदा परिप्रेक्ष्य को समझना, उसकी जड़ें और प्रभावों की जांच करना, और इस समस्या के समाधान के लिए नई सोच की आवश्यकता पर चर्चा करना है।

कुंजीशब्द— भारतीय समाज, भ्रष्टाचार, जटिल, विकराल समस्या, शासन-प्रशासन, नैतिक, आर्थिक संरचना, कानून, संगठन

भ्रष्टाचार वह कृत्य है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पद, अधिकार, या सत्ता का दुरुपयोग करके अवैध या अनैतिक लाभ प्राप्त करता है। यह किसी कार्य, सेवा या निर्णय के बदले पैसे, वस्तुएं, या अन्य प्रकार के व्यक्तिगत लाभ लेने को दर्शाता है। भ्रष्टाचार में न केवल सरकारी अधिकारी या कर्मचारी, बल्कि निजी क्षेत्र के व्यक्ति भी शामिल हो सकते हैं, जो अपने पद का फायदा उठाकर नियमों और कानूनों का उल्लंघन करते हैं।

भ्रष्टाचार के उदाहरणों में घूसखोरी, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, सरकारी परियोजनाओं में अनियमितताएँ, अवैध संपत्ति अर्जन, और कानून का दुरुपयोग शामिल हैं। यह न केवल सरकारी तंत्र में, बल्कि समाज के हर क्षेत्र में प्रभाव डाल सकता है और आर्थिक असमानता, न्यायिक विफलता और सामाजिक विश्वास को नुकसान पहुँचाता है। सरल शब्दों में, भ्रष्टाचार का मतलब है "नैतिक मूल्यों और ईमानदारी का उल्लंघन करके अवैध लाभ प्राप्त करना।"

भ्रष्टाचार के कई प्रकार होते हैं, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों में प्रकट होते हैं। इन प्रकारों को समझने से हम भ्रष्टाचार के प्रभावों और इसके समाधान के रास्ते को अधिक स्पष्ट रूप से पहचान सकते हैं। नीचे भ्रष्टाचार के प्रमुख प्रकार दिए गए हैं:

1. घूसखोरी – घूसखोरी भ्रष्टाचार का सबसे सामान्य रूप है, जिसमें किसी व्यक्ति या संस्था को किसी कार्य के बदले धन, उपहार या अन्य प्रकार के लाभ दिए जाते हैं। यह सरकारी अधिकारियों से लेकर व्यापारिक संदर्भों में भी पाया जाता है, जहाँ काम या सेवाएं मुहैया करवाने के बदले घूस ली जाती है। उदाहरण के तौर पर, सरकारी कर्मचारी से कोई सरकारी दस्तावेज प्राप्त करने के लिए घूस देना।

2. पद का दुरुपयोग – इस प्रकार के भ्रष्टाचार में अधिकारी अपने पद और शक्तियों का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग करते हैं। इसमें सरकारी योजनाओं, नीतियों और संसाधनों का गलत तरीके से उपयोग करना शामिल है। उदाहरण के लिए, किसी सरकारी अधिकारी का निजी लाभ के लिए सरकारी परियोजना में परिवर्तन करना या अनुशासनहीनता करना।

3. कालाबाजारी – कालाबाजारी तब होती है जब कोई व्यक्ति या संगठन वस्तुओं या सेवाओं को अधिक कीमत पर बेचता है, विशेष रूप से जब वस्तु की आपूर्ति सीमित हो या उसका मूल्य सरकारी नियंत्रण में हो। यह काले धन का सृजन और वितरण करने के लिए जिम्मेदार होता है और समाज में आर्थिक असमानताओं को बढ़ाता है।

4. रिश्वतखोरी – यह भ्रष्टाचार का एक प्रकार है, जिसमें कोई व्यक्ति किसी परियोजना या अनुबंध को प्राप्त करने के बदले संबंधित पक्ष से रिश्वत या कमीशन प्राप्त करता है। सरकारी ठेकों या अन्य सरकारी अनुबंधों में यह प्रकार बहुत आम होता है।

5. नैतिक भ्रष्टाचार – यह उस स्थिति को दर्शाता है, जब व्यक्ति या संस्था किसी कार्य को केवल अपने निजी हित के लिए करती है, बिना यह ध्यान में रखे कि यह कार्य नैतिक रूप से सही है या नहीं। इसमें किसी कर्मचारी द्वारा अनुशासनहीनता, झूठ बोलना या किसी अन्य व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन करना शामिल है।

6. मनी लाँड्रिंग – मनी लाँड्रिंग वह प्रक्रिया है जिसमें अवैध रूप से अर्जित धन को वैध तरीके से दिखाया जाता है, ताकि वह बिना किसी कानूनी कार्रवाई के सामान्य लेन-देन के रूप में उपयोग किया जा सके। यह प्रकार वित्तीय भ्रष्टाचार का हिस्सा है और यह आर्थिक अपराधों को बढ़ावा देता है।

7. नेताओं की भ्रष्टाचार – इसमें राजनीतिक दलों या नेताओं द्वारा अपने व्यक्तिगत या पार्टी के लाभ के लिए सत्ता का दुरुपयोग करना शामिल है। यह मतदाताओं को धोखा देने, चुनावों में धोखाधड़ी करने या पार्टी के हितों को बढ़ाने के लिए सरकारी संसाधनों का उपयोग करने के रूप में सामने आता है।

8. संपत्ति का गलत तरीके से अर्जन – किसी व्यक्ति द्वारा अपने पद या नौकरी का दुरुपयोग करके अवैध तरीके से संपत्ति अर्जित करना। यह कई बार घूस, रिश्वत या अन्य अनैतिक तरीकों से किया जाता है।

9. संवैधानिक और कानूनी भ्रष्टाचार – इसमें कानूनी या संवैधानिक व्यवस्थाओं का दुरुपयोग किया जाता है। सरकारी और न्यायिक निर्णयों को अपने व्यक्तिगत या पार्टी हित के लिए प्रभावित करना इस प्रकार के भ्रष्टाचार का हिस्सा है।

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार की जड़ें – भारतीय समाज में भ्रष्टाचार की जड़ें कई कारणों से गहरी हैं, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित हैं। भारतीय समाज में भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान केवल कानूनों या कड़े कदमों से नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसके पीछे एक लंबा इतिहास और संरचनात्मक कारण हैं।

1. सांस्कृतिक और सामाजिक स्वीकृति – भारत में भ्रष्टाचार को कभी-कभी एक सामान्य और स्वीकार्य प्रथा के रूप में देखा जाता है। लंबे समय से, घूस और रिश्वत को 'सिस्टम का हिस्सा' माना जाता रहा है। उदाहरण के लिए, सरकारी दफ्तरों में काम कराने के लिए रिश्वत देना या कानूनी कार्यवाही को आसान बनाने के लिए अधिकारियों को पैसा देना आम बात बन गई है। यह सामाजिक मानसिकता भ्रष्टाचार को किसी गंभीर समस्या के रूप में देखने में बाधा डालती है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ASVP PIF-9.776 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14



2. गरीबी और आर्थिक असमानता – भारत में बड़ी संख्या में लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं, और समाज में भारी आर्थिक असमानताएँ हैं। जब लोगों के पास आर्थिक संसाधन नहीं होते, तो वे भ्रष्टाचार को अपनी स्थिति सुधारने का एक तरीका मानते हैं। भ्रष्टाचार का यह रूप “नियमों की अनदेखी” करने से लेकर सरकारी योजनाओं और सहायता का गलत इस्तेमाल करने तक हो सकता है।

3. राजनीतिक पक्षपातीपन और भ्रष्टाचार – भारत में चुनावों के दौरान भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है, खासकर जब नेता वोट बैंक को सुदृढ़ करने के लिए भ्रष्ट तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण स्वरूप, सरकारी योजनाओं का वितरण और सरकारी पैसे का दुरुपयोग चुनावी लाभ के लिए किया जाता है। राजनीतिक पार्टियों द्वारा दी जाने वाली रिश्वत या अन्य लाभ भ्रष्टाचार को और बढ़ाते हैं। साथ ही, राजनीतिक दलों के भीतर की आंतरिक प्रतिस्पर्धाएँ और भ्रष्ट नेताओं का होना भी एक बड़ी समस्या है।

4. कानूनी और प्रशासनिक ढांचे में खामियाँ – भारतीय कानूनी और प्रशासनिक तंत्र में भी कई खामियाँ हैं, जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती हैं। जैसे कि, न्यायिक प्रणाली में देरी, कानूनों का सही तरीके से पालन न होना, और भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की कमी। जब कानून का पालन सख्ती से नहीं होता या कार्रवाई नहीं की जाती, तो भ्रष्टाचार में वृद्धि होती है, क्योंकि लोग यह मानने लगते हैं कि वे बिना सजा के अपने गलत कार्यों को जारी रख सकते हैं।

5. शासन की कमजोरी – भारत में सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों पर जब कोई कड़ा नियंत्रण नहीं होता या शासन कमजोर होता है, तो भ्रष्टाचार बढ़ता है। प्रशासनिक संस्थाओं की निर्बलता और भ्रष्टाचार के मामलों में लापरवाही भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। साथ ही, भ्रष्टाचार के मामलों में जांच-पड़ताल की कमी और सजा का न होना इस समस्या को विकराल बनाता है।

6. नैतिकता और शिक्षा का अभाव – भारत में शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और ईमानदारी को प्राथमिकता नहीं दी जाती है, जिसके कारण लोग बचपन से ही नैतिक और कानूनी मूल्य नहीं सीखते। नैतिक शिक्षा की कमी से युवा पीढ़ी भ्रष्टाचार को एक आम और स्वीकार्य प्रथा के रूप में देखती है, जो बाद में उनके जीवन में समाहित हो जाती है।

7. कंपनियों और उद्योगों में भ्रष्टाचार – व्यापारिक क्षेत्रों में भी भ्रष्टाचार फैल चुका है। सरकारी ठेकों और परियोजनाओं में निजी कंपनियों द्वारा रिश्वत देना, काले धन का लेन-देन, और फर्जी दस्तावेजों का निर्माण कर मुनाफा कमाना आम बात है। इन निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ मिलकर सरकारी अधिकारी भी भ्रष्टाचार में लिप्त होते हैं, जिससे भ्रष्टाचार का यह चक्र और मजबूत हो जाता है।

8. सामाजिक संरचनाओं में भ्रष्टाचार – भारतीय समाज में जातिवाद, सामाजिक भेदभाव और उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच गहरी खाई भी भ्रष्टाचार के विस्तार में योगदान देती है। जब समाज में असमानताएँ बढ़ती हैं, तो लोग अपने सामाजिक और आर्थिक लाभ के लिए भ्रष्टाचार को अपनाने को मजबूर होते हैं। इसके कारण व्यवस्था में असमानता और भ्रष्टाचार दोनों बढ़ते हैं।

9. अपराध और राजनीति का गठजोड़ – भारत में कई बार राजनीति और अपराधियों का गठजोड़ देखने को मिलता है, जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। जब अपराधी राजनीतिक पदों पर पहुँचते हैं, तो वे अपने आपराधिक कार्यों को छिपाने और अपने हितों की रक्षा के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं।

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार का प्रभाव – भारतीय समाज में भ्रष्टाचार का प्रभाव अत्यधिक गहरा और व्यापक है। यह न केवल सरकारी तंत्र, बल्कि पूरे समाज, आर्थिक संरचना, और राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करता है। भ्रष्टाचार समाज के हर पहलू में नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानताएँ, सामाजिक विघटन और लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरी उत्पन्न होती है। भारतीय समाज में भ्रष्टाचार के प्रभाव निम्नलिखित हैं।

1. भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा प्रभाव आर्थिक विकास पर पड़ता है। जब सरकारी अधिकारी या संस्थाएँ रिश्वत के बदले ठेके देते हैं, तो यह गुणवत्ता और पारदर्शिता में कमी लाता है। इससे सही परियोजनाओं का चयन नहीं हो पाता और गलत कार्यों के लिए संसाधन बर्बाद हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप निवेशक भयभीत होते हैं, जिससे विदेशी निवेश कम हो जाता है और अंततः विकास दर में गिरावट आती है।

2. भ्रष्टाचार समाज में असमानता को बढ़ावा देता है, खासकर जब गरीब और कमजोर वर्गों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलता है। सरकारी कर्मचारी और अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करके लाभ प्राप्त करते हैं, जबकि समाज के निचले तबके के लोग इस व्यवस्था से वंचित रहते हैं। इससे समाज में असंतोष और तनाव उत्पन्न होता है, जो सामाजिक स्थिरता को प्रभावित करता है।

3. भ्रष्टाचार लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली को कमजोर करता है। जब राजनीतिक नेताओं और अधिकारियों को अपने पदों पर बने रहने के लिए भ्रष्ट तरीकों से समर्थन मिलता है, तो यह लोकतांत्रिक चुनावों की निष्पक्षता को प्रभावित करता है। चुनावों में पैसे का दुरुपयोग, वोटों की खरीद-फरोख्त और चुनावी भ्रष्टाचार से लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की विश्वसनीयता कम होती है। इसके परिणामस्वरूप, लोग लोकतंत्र में विश्वास खोने लगते हैं और चुनावी भागीदारी में कमी आ जाती है।

4. भ्रष्टाचार के कारण सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में गिरावट आती है। जैसे कि स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा, सड़कें और अन्य बुनियादी सुविधाएँ। जब अधिकारियों को रिश्वत मिलती है, तो वे केवल उन लोगों को सेवा प्रदान करते हैं जो उन्हें पैसा देते हैं, जिससे वास्तविक जरूरतमंदों को सेवाएँ नहीं मिल पातीं। इस प्रकार, भ्रष्टाचार के कारण सार्वजनिक सेवाएँ न केवल महंगी हो जाती हैं, बल्कि कम गुणवत्ता वाली भी हो जाती हैं।

5. भ्रष्टाचार न्यायिक प्रणाली में भी प्रवेश कर चुका है। न्यायाधीशों और वकीलों द्वारा रिश्वत के मामलों की बढ़ती के कारण न्यायिक प्रक्रिया में देरी होती है और कई बार दोषियों को सजा नहीं मिलती। यह भ्रष्टाचार न्याय व्यवस्था की निष्पक्षता और प्रभावशीलता को प्रभावित करता है और लोगों का न्याय प्रणाली पर विश्वास कमजोर कर देता है।

6. भारत में भ्रष्टाचार अक्सर अपराधियों और राजनीति के बीच गठजोड़ को बढ़ावा देता है। कई अपराधी संगठनों के सदस्य राजनीतिक पदों पर पहुँचते हैं और सत्ता का दुरुपयोग करते हैं। इस गठजोड़ से अपराध और भ्रष्टाचार दोनों बढ़ते हैं, और इससे कानून-व्यवस्था की स्थिति और भी बिगड़ जाती है।

7. भ्रष्टाचार समाज में नैतिक मूल्यों के पतन का कारण बनता है। जब लोग देखते हैं कि भ्रष्टाचार करने वाले लोग बिना किसी सजा के सफल हो रहे हैं, तो उन्हें यह संदेश मिलता है कि ईमानदारी और नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है। यह सामाजिक



जिम्मेदारी और ईमानदारी के सिद्धांतों को कमजोर करता है और लोगों को भ्रष्टाचार को एक सामान्य और स्वीकार्य कृत्य मानने के लिए प्रेरित करता है।

8. भ्रष्टाचार समाज में असंतोष और विरोध की भावना को जन्म देता है। लोग महसूस करते हैं कि वे न्याय प्राप्त करने में असमर्थ हैं और भ्रष्ट तंत्र के कारण उनके अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है। इससे सामाजिक आंदोलनों, विरोध प्रदर्शनों और सार्वजनिक हड़तालों की संभावना बढ़ जाती है, जो समाज में अशांति और राजनीतिक संकट का कारण बन सकती है।

9. भारत में भ्रष्टाचार, संविधानिक संस्थाओं की प्रभावशीलता को कमजोर करता है, खासकर लोकपाल और भ्रष्टाचार विरोधी समितियों की भूमिका। जब भ्रष्टाचार के मामले न्यायालयों या अन्य संस्थाओं में लंबित रहते हैं, तो लोग संस्थाओं के प्रति विश्वास खो देते हैं और इससे उनका दुरुपयोग बढ़ता है। यह लोकतंत्र की कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान: नई सोच की आवश्यकता – भ्रष्टाचार भारतीय समाज और सरकार की एक गंभीर समस्या है, जिसे केवल पारंपरिक उपायों से सुलझाना मुश्किल है। इसका प्रभाव केवल आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं पर भी पड़ता है। इसलिए, भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक नई सोच और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। नीचे कुछ ऐसे महत्वपूर्ण उपाय दिए गए हैं, जो भ्रष्टाचार को प्रभावी ढंग से कम करने में मदद कर सकते हैं:

1. भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है शिक्षा और जागरूकता। नागरिकों को यह समझाना आवश्यक है कि भ्रष्टाचार केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं, बल्कि समाज और देश के लिए हानिकारक है। इसके लिए, विशेष रूप से बच्चों और युवाओं में नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। अगर व्यक्ति बचपन से ही ईमानदारी और नैतिकता के महत्व को समझेगा, तो बड़े होकर वह भ्रष्टाचार से बच सकता है।

2. भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए कानून और न्यायिक प्रक्रिया को सख्त और तेज बनाना अत्यंत आवश्यक है। कई बार भ्रष्टाचार के मामलों में लापरवाही या देरी होती है, जिससे दोषी बच निकलते हैं। न्यायिक प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है, ताकि भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों का शीघ्र निपटान हो सके। इसके लिए डिजिटल प्रणाली और स्मार्ट कोर्ट की मदद ली जा सकती है, जिससे मामलों को जल्दी और पारदर्शी तरीके से निपटाया जा सके।

3. भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए तकनीकी समाधान एक प्रभावी तरीका हो सकता है। डिजिटल पद्धतियों का इस्तेमाल करके सरकारी योजनाओं, ठेकों, ट्रांसफर और अन्य सरकारी कार्यों में पारदर्शिता लाई जा सकती है। ई-गवर्नेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्मों का इस्तेमाल बढ़ाकर नागरिकों को सीधे शासन के साथ जोड़ सकते हैं, जिससे भ्रष्टाचार के लिए कोई जगह नहीं रह जाती। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन आवेदन प्रणाली और डिजिटल पेमेन्ट्स से रिश्वतखोरी और कागजी कार्रवाई में घूस की प्रथा को खत्म किया जा सकता है।

4. भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए नागरिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। जब नागरिकों को भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने की स्वतंत्रता मिलती है और वे खुद निगरानी का हिस्सा बनते हैं, तो सिस्टम में सुधार संभव होता है। लोकपाल जैसे संस्थान, जो भ्रष्टाचार के मामलों की जांच करते हैं, उनकी भूमिका को सशक्त किया जा सकता है। इसके अलावा, मीडिया और एनजीओ जैसे संगठनों को भी अधिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ताकि वे भ्रष्टाचार को उजागर कर सकें।

5. राजनीतिक और प्रशासनिक सुधार का भी भ्रष्टाचार पर असर पड़ता है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए राजनीतिक नेताओं और सरकारी कर्मचारियों की जवाबदेही बढ़ानी होगी। इसके लिए, चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी बनाना, राजनीतिक दलों की फंडिंग की निगरानी करना और उम्मीदवारों के वित्तीय ब्यौरे को सार्वजनिक करना आवश्यक है। इसके अलावा, प्रशासनिक अधिकारियों को उनकी जवाबदेही का एहसास कराना और उन्हें पारदर्शी तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित करना भी महत्वपूर्ण है।

6. सरकार को पारदर्शी और जिम्मेदार शासन की ओर अग्रसर होना चाहिए। सरकारी निर्णयों और योजनाओं को आम जनता के सामने लाकर, उनकी निगरानी और समीक्षा की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जा सकता है। जब सरकार अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होगी, तो वह भ्रष्टाचार से बचने के लिए मजबूर होगी। लोक सूचना अधिकार (RTI) जैसे कानून नागरिकों को सरकारी कार्यों में पारदर्शिता हासिल करने का अधिकार देते हैं, और इस तरह की पहल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

7. संविधान और कानूनों में ऐसे बदलाव किए जा सकते हैं, जो भ्रष्टाचार को प्रभावी ढंग से रोकें। लोकपाल और लोकायुक्त जैसी संस्थाओं को और अधिक सशक्त और प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके साथ ही, भ्रष्टाचार के मामलों की सुनवाई में तेजी लाने के लिए विशेष अदालतों की स्थापना भी की जा सकती है, ताकि दोषियों को शीघ्र सजा मिल सके।

8. भारतीय समाज में संस्कार और मूल्यों की पुनर्स्थापना अत्यंत आवश्यक है। परिवार और विद्यालयों में बच्चों को ईमानदारी, न्याय, और समानता के सिद्धांतों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि समाज के हर वर्ग में, विशेषकर नेताओं और अधिकारियों के बीच, एक मजबूत नैतिक ढांचा हो, ताकि वे अपने कर्तव्यों का पालन करें और भ्रष्टाचार से बचें।

9. नैतिक नेतृत्व भी भ्रष्टाचार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नेताओं को यह समझना होगा कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं और उनकी भूमिका केवल सत्ता की प्राप्ति तक सीमित नहीं है। उन्हें भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ा होना होगा और अपने कार्यों में ईमानदारी का आदर्श प्रस्तुत करना होगा। जब समाज में ईमानदार और नैतिक नेता होंगे, तो लोगों के लिए भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ा होना आसान होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013.
2. इंडिया टुडे रिपोर्ट, 2022.
3. Kumar Rajeev (2016) "Corruption in India: Theoretical Perspectives", Sage Publications.
4. Jain Arvind K. (2001) "The Political Economy of Corruption" Routledge Publications.
5. Panagariya Arvind (2008) "India: The Emerging Giant" Publications Oxford University Press.
6. Gangopadhyay Shubhashis (2006) "Good Governance and Development", Publications : Oxford University Press.
